



दक्षिणामूर्ति शिव साधना परिषद
सत्यम नगर, सामने घाट, लंका ,वाराणसी
221005

गुरु का महत्व



गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकारस्तेज उच्यते।
अन्धकारनिरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते ॥



गुरु कौन होते हैं?

उनका जीवन में क्या महत्व होता है?

गुरु क्यों होने चाहिए?

क्या गुरु होना आवश्यक है?

यह सभी सवालों के जवाब आपको जल्दी मिलेंगे

वैसे तो गुरु की महिमा में जितने शब्द बोले जाये...लिखे जाएं
बहुत कम पड़ेंगे।

फिर भी हमें बहुत सूक्ष्म रूप में आपको समझना हो कि गुरु
कौन होते हैं..तो आप इस प्रकार समझ सकते हैं कि-

जैसे जीवन में माता है पिता है वैसे ही गुरु माता और पिता दोनों
है। ब्रह्मांड का सबसे सच्चा और सबसे निस्वार्थ रिश्ता गुरु शिष्य
का रिश्ता होता है।

गुरु वह है जो शिष्य को सभी तरह की नकारात्मक चीजों से
बचाते हुए सात्विकता का मार्ग दिखाते हैं। शिष्य को प्रगति के
मार्ग पर लेकर आते हैं और मोक्ष का रास्ता दिखाते हैं।

एक गुरु अपने शिष्य को कभी भी प्रेरणाहीन नहीं करेंगे वह
हमेशा उनका हौसला बढ़ाते रहेंगे।



हो सकता है गुरु बाहर से जरूर उनके सामने थोड़े से कठोर बन रहे हो लेकिन एक गुरु का अपने शिष्य के प्रति मन हमेशा कोमल रहता है निरंतर वह अपने शिष्य की उतनी ही चिंता करते हैं जितना मां-बाप अपने अपने छोटे से बच्चों के लिए करते है। हो सकता है कि एक शिष्य जीवन में कभी किसी कारणवश या भूल चूक से अपने गुरु का हाथ छोड़ दे या अपने पथ से भटक जाए लेकिन एक गुरु अपने शिष्य का हाथ कभी नहीं छोड़ता है।

गुरु का जीवन में महत्व? गुरु क्यों होने चाहिए? क्या गुरु का होना आवश्यक है?

पहले हम समझते हैं कि जीवन क्या है?

-जीवन ठीक ऐसे ही है जैसे कि समुद्र है और समुद्र में जो है आप जहाज में चल रहे हैं लेकिन उस जहाज पर यदि नाविक ना हो(ड्राइवर ना हो)तो क्या होगा आपका जहाज समुद्र में; हवा आएगी तो इधर जाएगा फिर उधर जाएगा।

गुरु हमारे जीवन को गाइड करते हैं हमें राह दिखाते है चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो...चाहे वह दैनिक जीवन हो..चाहे वह मोक्ष का रास्ता हो।



गुरु क्या करता है कि आने वाले परेशानी को रोकता है ठीक उसी तरह जैसे आप एक बहुत तेज बारिश में खड़े हैं लेकिन आपको एक छाता दे दिया जाए तो छाते के कारण आप बारिश में खड़े हैं लेकिन आपको बारिश से फर्क नहीं पड़ेगा गुरु इसी तरह एक ढाल बनाकर अपने शिष्य के लिए खड़े होते हैं।

ऐसे में यदि गुरु एक पावरफुल गुरु है तो आप मान कर चलिए की शिष्य का इस जन्म में बेड़ा पार लग चुका है।

एक शिष्य को जितना अपनी स्थिति का अनुमान होगा उससे कहीं ज्यादा एक पावरफुल गुरु 2000 किलोमीटर दूर बैठे भी उनकी स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं।

गुरु अपने शिष्य के लिए कोई भी कार्य या संबंधित जिम्मेदारी उनकी योग्यता के अनुसार देते हैं।

गुरु कभी भी अपने शिष्य की क्षमता से ज्यादा उन्हें कार्य देकर या बताकर उनका बोझ नहीं बढ़ाते हैं बल्कि वह धीरे-धीरे अपने शिष्य की क्षमता इस प्रकार बढ़ा देते हैं कि उनका शिष्य जीवन में कुछ भी हासिल कर सकता है।



जितना दूर तक या भविष्य का एक शिष्य नहीं सोच सकता है गुरु हमेशा अपने शिष्य के लिए सोचते हैं भले ही शिष्य को लगे कि उस क्षण में उनके गुरु ने उनके लिए कठोर या आप कहें कि एक ऐसा निर्णय लिया है जो सही नहीं है पर कुछ समय बाद या कुछ वर्षों के बाद शिष्य जरूर महसूस करेंगे कि उनके गुरु ने जो सोचा था जो उनके लिए निर्णय लिया वह बिल्कुल सही था।

यदि एक पावरफुल गुरु अपने शिष्य को माटी भी खाने को बोल दे तो आप समझ लीजिए कि वह माटी उसके लिए अमृत है शिष्य को बिना कुछ सोचे समझे अपने गुरु की हर आज्ञा का पालन करना चाहिए और उनका सम्मान भी पूर्ण रूप से करना चाहिए।

पावरफुल गुरु होना जीवन में बहुत अनिवार्य है।

यदि आप एक गुरु को पूछेंगे कि आपने उनकी कितनी बजे पूजा करी थी तो क्या वह बता पाएंगे?

लेकिन यदि आप एक पावरफुल गुरु से पूछेंगे कि आपने कितने बजे उनकी पूजा करी थी तो आपको समय भी बता देंगे.. एक पावरफुल गुरु का होना जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।



आप सभी सोचेंगे यदि गुरु इतना पावरफुल है तब तो फिर हर शिष्य का बहुत आरामदायक जीवन निकल सकता है पर यदि गुरु पावरफुल है तो जीवन में कठिनाइयां भी और परीक्षा भी उसी तरह होती है ताकि शिष्य और निखर सके।

एक पावरफुल गुरु के साथ हमेशा परमात्मा (ब्रह्म) जरूर होते हैं।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

अर्थ -परमात्मा (ब्रह्म) स्वयं में पूर्ण है और उनसे उत्पन्न होने वाला यह संसार तथा हम सभी जीवात्माएं भी मूल रूप से पूर्ण हैं। जब उस अनंत और संपूर्ण परमात्मा से इस पूर्ण सृष्टि का निर्माण होता है, तब भी उनके भीतर कोई कमी नहीं आती। ठीक इसी तरह, जब कोई अपूर्ण या सीमित लगने वाली जीवात्मा आध्यात्मिक रूप से जागृत होकर वापस उस परमेश्वर में विलीन (मिल) जाती है, तो उसका अपना अलग अस्तित्व



समाप्त हो जाता है और वह भी पूरी तरह से पूर्ण (अनंत)
हो जाती है—अर्थात् पूर्ण में से पूर्ण को निकाल लेने या जोड़ने
पर भी केवल पूर्ण ही शेष बचता है।

जय दक्षिणामूर्ति शिव गुरुदेव 🌹 🙏

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad

For more information on spiritual content follow our channel and page -tap on icon/link:

अध्यात्म से जुड़ी अधिक जानकारी के लिए icon/link पर क्लिक करें और चैनल को फॉलो करें।

CLICK HERE



YouTube

<https://m.youtube.com/@ShriDakshinaMurtiShivSadhanaPa>



<https://whatsapp.com/channel/0029VazNzZhEquiGjJjCVV17>



https://www.instagram.com/dakshinamurtishiv?utm_source=wa4a&utm_campaign=wa_vpl_m2_uvfvweb



<https://www.facebook.com/sanjay.towardhimaharaj/>



<https://t.me/dakshinamurtishiv>

जो महानुभाव कुछ दिन या आजीवन रहकर ज्योतिष, ध्यान इत्यादि विभिन्न प्रकार की साधनाएं सीखना चाहते हैं या परिवार से दूर भगवान की भक्ति में जीवन बिताना चाहते हैं, उनके लिए रहना-खाना निःशुल्क है।

सम्पर्क करें:-

ज्योतिषाचार्य संजय तिवारी जी महाराज

दक्षिणामूर्ति शिव साधना परिषद,

सत्यम नगर, सामने घाट, लंका, वाराणसी 221005

मोबाइल: 8887813241

8660820545

जो लोग गुरुदेव दक्षिणामूर्ति शिव से दीक्षा लेना चाहते हैं, वे सभी संपर्क कर सकते हैं।

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad Varanasi

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad Varanasi